lndu Kumari.

Assistant. Professor

Dept. of Economics, B. N. College, Bhagalpur,

T. M. Bhagalpur University

B.A Part-1, paper-1

परेटो अनुकूलतम का आलोचनात्मक मूल्यांकन

परेटो का मानदंड तथा परेटो अनुकूलतम और उस पर आधारित अधिकतम सामाजिक कल्याण की अवधारणा का कल्याणकारी अर्थशास्त्र में महत्वपूर्ण स्थान है। परंतु परेटो के कल्याणकारी मानदंड तथा उस पर आधारित अनुकूलतम की अवधारणा के निम्न दृष्टिकोण से आलोचना की गई है।

- **परेटो का मानदंड नैतिक मान्यताओं से स्वतंत्र नहीं**- परेटो मानदंड के समर्थक यह दावा करते हैं कि यह आर्थिक कुशलता अथवा कल्याण का एक वस्तुपरक मानदंड है जिसमें व्यक्ति के नैतिक मूल्यों का कोई स्थान नहीं है। किंतु इस विचार को चुनौती दी गई है। आलोचकों का कहना है कि परेटो की आधारभूत मान्यता है कि अन्य व्यक्तियों के स्थिति पूर्ववत रहते हुए कुछ व्यक्तियों को यदि लाभ होता है तो समाज कल्याण वृद्धि होगी, यह भी एक नैतिक मान्यता है जो सर्वमान्य नहीं। कारण यह है कि हम ऐसे नीति परिवर्तन को अपनाने या लागू करने की सिफारिश करते हैं जो परेटो के

मानदंड पर श्रेष्ठ सिद्ध होते हैं, चाहे उन नीति परिवर्तन से लाभ उठाने वाले व्यक्ति पहले ही धनी हो और पूर्व स्थिति में बने रहने वाले व्यक्ति निर्धन अतएव आर्थिक नीति के परिवर्तनों से किन व्यक्तियों को लाभ पहुंचता है और कौन पूर्व स्थिति में रहते हैं को विचार में लाएं बिना यह कहना कि यदि किसी नीति के अपनाने से अन्य व्यक्तियों को हानि पहुंचाए बिना कुछ व्यक्तियों को लाभ पहुंचता है तो वह श्रेष्ठ है एक नैतिक मान्यता ही है। जो व्यक्ति कुछ थोड़े से व्यक्तियों के धनी बनने को सामाजिक कल्याण के लिए अच्छा नहीं समझते परेटो के मानदंड को नैतिक दृष्टि से श्रेष्ठ नहीं समझते।

- **पैरेट के मानदंड के सीमित व्यावहारिकता-**

  परेटो के मानदंड की एक भारी कमी यह है कि यह उन नीति प्रस्तावों की सामाजिक वांछनीयता अर्थात सामाजिक कल्याण पर इसके प्रभाव की जांच नहीं करता, जो समाज के एक वर्ग को लाभ परंतु दूसरे वर्ग को हानि पहुंचाते हैं। परंतु ऐसे नीति परिवर्तन बहुत विरले हैं जो समाज के कुछ व्यक्तियों को हानि पहुंचाए बिना दूसरे को लाभ पहुंचाए। इसीलिए परेटो के मानदंड का आर्थिक नीति निर्धारण में सीमित व्यावहारिक महत्व है क्योंकि इसका प्रयोग उन्नति प्रस्तावों जिससे विभिन्न व्यक्तियों के हितों का टकराव होता है की समाजिक अनुकूलता की जांच नहीं कर सकता। कल्याणकारी अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ प्रोफेसर पी.के पटनायक के अनुसार “जब विकल्पों की तुलना करनी होती है तो परेटो अनुकूलतम बुरी तरह असफल रहता है दो विकल्पों के विषय में जब दो व्यक्तियों के हितों में टकराव होता है यहां

मानदंड उन विकल्पों की उत्कृष्टता के बारे में कुछ नहीं बता सकता चाहे समाज के अन्य व्यक्तियों के लिए इनके लिए अधिमान कितने ही अधिक क्यों ना हो ।"

- **परेटो अनुकूलतम की अनिश्चितता-**

  परेटो अनुकूलतम विश्लेषण की एक कमी यह भी है कि इससे अधिकतम सामाजिक कल्याण के विश्लेषण में बड़ी निश्चित अनिश्चितता रहती है इसका यह कारण है, कि इस विश्लेषण में संविदा वक्र (contract curve) पर प्रत्येक बिंदु परेटो मांदड़ की दृष्टि से अनुकूल होते हैं। परेटो मानदंड के आधार पर संविदा वक्र पर स्थित समाजिक विकल्पों की परस्पर तुलना नहीं की जा सकती क्योंकि संविदा वक्र पर गति से एक व्यक्ति को लाभ तथा दूसरे को हानि होती है। इसीलिए संविदा वक्र पर स्थित विभिन्न विकल्पों की तुलना और उनमें चयन तुष्टिगुणों की अंतव्यक्ति तुलना और उचित आय वितरण के बारे में नैतिक निर्णय (value judgement) उनके बिना नहीं किया जा सकता। परंतु परेटो ने अर्थशास्त्रियों द्वारा यह नैतिक निर्णय लेना उचित नहीं समझा और एक वस्तुपरक अथवा नैतिक निर्णय से स्वतंत्र सामाजिक कल्याण के मानदंड प्रस्तुत करने की चेष्टा की है, किंतु परेटो विश्लेषण अपने मानदंड द्वारा किसी निश्चित अनुकूलतम पर पहुंचने में असफल रहा है। इस मानदंड के आधार पर किसी नीति परिवर्तन अथवा आय के पुनर वितरण के परिणाम स्वरूप संविदा वक्र से बाहर के बिंदु से उसके ऊपर स्थित बिंदु पर जाने से सामाजिक कल्याण में वृद्धि का होना सिद्ध किया जा सकता है परंतु संविदा वक्र के ऊपर स्थित

विभिन्न बिंदुओं जो सभी परेटो दृष्टिकोण से अनुकूलतम होते हैं मैं चयन नहीं किया जा सकता अतः सामाजिक कल्याण के परेटो अनुकूलतम विश्लेषण में बड़ी मात्रा में अनिश्चितता पाई जाती है क्योंकि ऐसे अनगिनत बिंदु है जो परेटो के दृष्टि से अनुकूलतम होते हैं।

- **परेटो अनुकूलतम के विश्लेषण में वर्तमान आय वितरण का समर्थन-**

  परेटो अनुकूलतम विश्लेषण की त्रुटि यह भी है कि इसमें वर्तमान आय वितरण जो अधिक विषम है को उचित मान लिया गया है और अनुकूल आय वितरण को मालूम करने की कोई कोशिश नहीं की गई क्योंकि इसके समर्थकों के विचार अनुसार कोई वस्तुपरक एक वैज्ञानिक तथा नैतिक मूल्यों से मुक्त तरीका नहीं है। इस प्रकार अनुकूल आय वितरण ज्ञात करने का परेटो अनुकूलतम का विश्लेषण आय वितरण के विषय में या तो चुप है, या वर्तमान स्थिति के पक्ष में है। इसके अनुसार परेटो विश्लेषण के आधार पर वर्तमान आय वितरण जिसके अंतर्गत अधिकांश जनता निर्धन और थोड़े से व्यक्ति धनी हैं को बनाए रखने का अनुमोदन किया जा सकता है। इस प्रकार प्रोफेसर बामोल के अनुसार "परेटो का दृष्टिकोण कल्याण वाद्य शास्त्रों के पास आए वितरण के विषय पर ध्यान न देने के लिए एक बड़ा उपकरण है।"

  अंततः यह कहा जा सकता है कि पैराटों का मानदंड बिल्कुल निरर्थक तो नहीं है परंतु यह इसलिए उपयोगी है, कि यह परेटो दृष्टिकोण से गैर- अनुकूल विकल्पों को अलग कर देने से उस

क्षेत्र पर जोर देता है जिससे सर्वोत्तम विकल्प की खोज हमें करनी है, और इस प्रकार यह एक प्रथम कदम के रूप में उपयोगी है। इसके अतिरिक्त पर फरेटो अनुकूलतम विश्लेषण का उपयोग यह भी है कि यह दो व्यक्ति अथवा दो देशों में वस्तुओं के विनिमय अथवा व्यापार के लाभों को स्पष्ट करता है।